जैव विविधता पंजी

गांव का संसाधन नक्शा

जैव विविधता पंजी / Bio Diversity Register

जैव-विविधता क्या है ?

जैव-विविधता का मतलब है प्रकृति पर निर्भर सभी तरह के जीवन। जरा सोचिये कि क्या धरती पर केवल इंसानों का ही जीवन है। यहाँ पेड़-पौधों का जीवन भी है। यहाँ तितलियों, मधुमक्खियों, केंचुओं, दीमक का जीवन है तो पक्षियों, घोड़े, बिल्ली और शेर का भी जीवन है। मिट्टी में छोटे-छोटे सूक्ष्म कीट होते हैं, जो बीमारी पैदा करने वाले कीटों को खत्म करते हैं। इससे ही बीज अंकुरित हो पाता है और खेती हो पाती है। यदि पेड़ न हों तो पत्तियां मिट्टी में सड़कर खाद नहीं बनायेंगी तब क्या होगा? यदि पेड़ न होंगे तो मिट्टी बह जायेगी तब खेती कैसे होगी? जब मिट्टी बह जायेगी और नदियों के किनारे टूट जायेंगे तब पानी सब तरफ फैल जाएगा। जब पानी रुकेगा नहीं और तेज धूप मिट्टी की नमी सोख लेगी, तब पानी के जीव कहाँ बच पायेंगे? मधुमक्खी न हो तब परागण कैसे होगा और फूलों में से उनका रस कैसे निकलेगा। घास न होगी तो गाय और हिरन क्या खायेंगे। शेर और बाघ की जिंदगी के लिए घास का होना अनिवार्य है। जब हिरन और दूसरे जानवर बिना घांस के जिन्दा नहीं रह पायेंगे तो क्या शेर और बाघ जिन्दा रह पायेंगे। धरती पर जानवरों-पक्षियों-कीटों-पेड़ पौधों-सूक्ष्म जीवों-नदी-पहाड़ों-जंगल-वनस्पतियों का जीवन एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। इनमें से एक का भी यदि जीवन खतम हुआ तो पूरा जीवन चक्र टूट जाएगा।

जैव विविधता के संरक्षण में समुदाय की भूमिका

पारंपरिक रूप से जैव-विविधता का संरक्षण स्थानीय समुदाय ने ही किया है, क्योंकि उसे इसके महत्व का ज्ञान रहा है। जल, जंगल, जमीन और जीव-जन्तु जो प्रकृति के महत्वपूर्ण अंग हैं वे सभी इस जैव-विविधता में समाहित हैं। अपने अनुभवों से लोगों ने यह जाना कि कौन सी वनस्पति किस तरह की बीमारी में कारगर साबित होगी। इसी तरह कौन सी मिट्टी किस तरह की फसल हेतु उपयुक्त है या कौन सी फसलों की किस्म या वनोपज हमारी आजीविका और खाद्य सुरक्षा के महत्वपूर्ण हिस्से हैं या रहे हैं। भौतिक विकास की दौड़ में हमने गाँव की जैव-विविधता और लोक संस्कृति से जुड़ी कई चीजों को खोया है किन्तु कहीं-कहीं यह विविधता अब भी शेष है। इसलिए सतत् विकास के लिए जैव-विविधता के संरक्षण-संवर्धन की आवश्यकता बन पड़ी है। गाँव में अभी भी ऐसे लोग मिल सकते हैं जो इन सब चीजों की जानकारी रखते हैं। वयस्कों खासकर युवाओं की भूमिका इनकी पहचान करने, उसका दस्तावेजीकरण करने में हो सकती है तो किसानों, वनोपज संग्रहकर्ताओं की भूमिका इसे बचाने-बढ़ाने और भोजन व दवाओं के रूप मे उपयोग की हो सकती है। इस पूरी प्रक्रिया में नीतिगत रूप से ग्राम स्तरीय जैव विविधता संरक्षण समिति की अहम भूमिका होगी।

जैव विविधता पंजी (Bio Diversity Register) का विचार

ग्रामीण स्तर पर तैयार की जाने वाली जैव विविधता पंजी म.प्र. के जैव विविधता नियम से प्रेरित है जो वर्ष 2004 में मध्यप्रदेश सरकार ने बनाए हैं। इस नियम के तहत स्थानीय जैव विविधता की लोक पंजी (यानी समुदाय द्वारा बनाया जाने वाला रजिस्टर) बनाए जाने का प्रावधान है। इस पंजी को बनाने का मुख्य मकसद स्थानीय जैव-विविधता से सम्बंधित ज्ञान को लोकहित के नजरिए से दर्ज करना है। यह पंजी एक सामुदायिक दस्तावेज है जिससे स्थानीय जैव-विविधता की व्यापकता, मौजूदा स्थिति व इससे सम्बंधित ज्ञान को जाना और समझा जा सकेगा। इस दस्तावेज का उपयोग समुदाय और स्थानीय निकाय जैव-विविधता के संरक्षण के लिए योजना बनाने और उन जानकारियों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में कर सकेंगे। ग्रामीण समुदाय की खाद्य सुरक्षा सुरक्षित करने के नजरिए से भी यह एक महत्वपूर्ण पहल है। जैव विविधता पंजी तैयार करने की यह कोशिश सरकारी नियमानुसार तय प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है बल्कि उसी दिशा में समुदाय स्तर पर जैव विविधता के संरक्षण-संवर्धन के लिए की जाने वाली सीख आधारित एक प्रक्रिया है।

जैव विविधता पंजी में क्या-क्या जानकारी दर्ज की जा सकती है?

इस पंजी में स्थानीय जैव विविधता और उससे समुदाय के जुड़ाव को दर्ज किया जाना चाहिए। इसमें मुख्य रूप से निम्न बिंदु शामिल होंगे –

- **प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता पर आधारित आजीविका की जानकारी** – जैसे महुआ इकट्ठा करना, मछली पालन, आंवला इकट्ठा करना आदि।
- **स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र की विविधता** – जैसे बारिश का मौसम, बारिश की मात्रा, तापमान आदि।
- **प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता** – जैसे पेड़ों, वनस्पतियों, जानवरों, पंछियों की कौन–कौन सी प्रजातियां मिलती हैं।
- **घरेलू उपयोग के लिए जैव विविधता** – जिसमें पालतू पशुधन शामिल हैं। जैसे गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़े, गधे के बारे में जानकारी और घरेलु उपयोग की वनस्पतियां कौन सी हैं उनके उपयोग और उनकी प्रजातियां कौन सी हैं।
- **जंगली फूलों और वनस्पतियों की विविधता** – जैसे वहां स्थानीय क्षेत्र में कौन–कौन से जंगली फूल और वनस्पतियां मिलती हैं। कौन सी प्रजाति के हैं, क्या उनका कोई उपयोग होता है।
- **जलीय वनस्पतियों की विविधता** – जैसे स्थानीय नदी–नालों–तालाबों में कौन सी जलीय वनस्पतियां मिलती हैं, उनका क्या उपयोग होता है, उनका महत्व क्या है।
- **जलीय जीवों की विविधता** – जैसे स्थानीय नदी–नालों–तालाबों में कौन से जलीय जीव मिलते हैं, उनका क्या उपयोग होता है, उनका महत्व क्या है।
- **जैव–विविधता और संस्कृति के बीच के परस्पर रिश्ते** – जैसे क्या पेड़ों, जंगल, नदी, जमीन, पशुओं से समुदाय के कोई आध्यात्मिक विश्वास जुड़े हुए हैं। क्या त्योहारों से उनका कोई जुड़ाव है।
- **जैव विविधता से जुड़ा हुआ सामुदायिक ज्ञान** – जैसे पशुओं, कीटों, वनस्पतियों, पेड़ों आदि के बारे में समुदाय की जानकारी क्या है। समुदाय में मुख्य रूप से किसे ज्यादा जानकारी है। क्या वह जानकारी नयी पीढ़ी को दी जा रही है।
- **जैव विविधता से जुड़ा हुआ सामुदायिक व्यवहार** – जैसे पशुओं, कीटों, वनस्पतियों, पेड़ों आदि के बारे में समुदाय के व्यवहार क्या हैं। इन व्यवहारों से सम्बंधित सिद्धांत और नियम कौन से हैं, क्या इस व्यवहार की जानकारी नयी पीढ़ी को दी जा रही है।
- **जैव विविधता और उसके प्रबंधन से जुड़े हुए पहलू** – जैसे जैव–विविधता का संरक्षण करने की समुदाय आधारित व्यवस्था क्या है। समुदाय के द्वारा बनाए गए नियम कौन से हैं। समुदाय में कौन मुख्य भूमिका निभाता है।
- **जैव विविधता के संरक्षण और संवर्धन के लिए सामुदायिक योजना** – जैसे अपने आस–पास के क्षेत्र में उपलब्ध या फिर लुप्त हो रही जैव–विविधता को बचाने और उसके संरक्षण के लिए समुदाय के साथ मिलकर एक योजना बनाएँ।

गांव में जैव विविधता की स्थिति का विवरण

जैव विविधता रजिस्टर तैयार किए जाने संबंधी विवरण

जैव विविधता पंजी का प्रारूप

1. गांव का परिचय

गांव का नाम ..... ग्राम पंचायत का नाम .....

विकास खंड का नाम ..... जिला का नाम .....

कुल परिवार संख्या ..... कुल जनसंख्या .....

गांव की भौगोलिक स्थिति एवं बसाहट के बारे में संक्षेप में लिखें (गांव की प्रोफाइल से)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. गांव में आजीविका की स्थिति

क्र.	गतिविधियां	लगभग कितने परिवार इस गतिविधि से जुड़े हैं	समुदाय में इस गतिविधि के बारे में जानकार व्यक्ति का नाम
1.	खेती एवं खेती से जुड़ी गतिविधियां		
2.	जैविक (परम्परागत) खेती से जुड़ी गतिविधियां		
3.	पशुपालन से संबंधित गतिविधियां		
4.	जंगल से संबंधित गतिविधियां		
5.	कारीगरी से संबंधित गतिविधियां		
6.	अन्य सेवाओं से संबंधित गतिविधियां		
7.	काम के लिए पलायन		
8.	मजदूरी एवं संबंधित गतिविधियां		

यहां इस तालिका के आधार पर हमें यह अध्ययन करना है कि गांव में कुल कितने परिवार हैं? आजीविका के लिए मुख्य रूप से वे किन कामों/क्षेत्रों पर निर्भर हैं? जैव-विविधता से मुख्य आजीविका का क्या और कैसा जुड़ाव है? उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में साल भर में से कितने दिनों/महीनों के लिए रोजगार मिलता है?

3. जल, जंगल, जमीन से संबंधित जानकारी

क्र.	संसाधन (तालाब, नदी, नाले, जंगल, पड़ती भूमि, पहाड़ी आदि)	स्थानीय नाम	क्षेत्रफल (एकड़ में)	आजीविका से जुड़ी गतिविधि	वर्तमान स्थिति	पिछले 10 सालों में हुए बदलाव	बदलाव के कारण
संसाधनों के बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम							

4. कृषि विविधता (मुख्य फसल, दलहन, तिलहन, सब्जी, जड़ कंद)

क्र.	फसल का नाम	फसल की किस्म स्थानीय बोली भाषा में	लगभग कितने क्षेत्र में बोई जाती है (एकड़ में)	बुवाई का समय	प्रति एकड़ उत्पादन	वर्तमान स्थिति (पर्याप्त बुवाई, कम बुवाई, बुवाई खत्म हो रही, बुवाई बढ़ रही)	फसल का मुख्य उपयोग
समुदाय में फसलों के बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम							

5. पालतू पशुओं की विविधता

क्र.	पशु का नाम (भैंस, गाय, बैल, बकरी, सुअर, मुर्गी आदि)	नस्लें	वर्तमान संख्या	अनुमानित उत्पादन (दूध/मांस/अंडे आदि किलो एवं संख्या में)	मुख्य उपयोग	वर्तमान स्थिति पर्याप्त संख्या/दुर्लभ/ संकटमय/विलुप्त
समुदाय में पशुओं के बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम						

6. वन्य प्राणी / जीव जंतु / पक्षी

क्र.	वन्य प्राणी/जीव जंतु/ पक्षी/जलीय जंतु/मछलियां एवं केकड़े आदि का नाम	स्थानीय नाम	वर्तमान अनुमानित संख्या	मुख्य स्वभाव एवं पारिस्थितिकीय उपयोगिता	वर्तमान स्थिति पर्याप्त संख्या/दुर्लभ/ संकटमय/विलुप्त
समुदाय में इनके बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम					

7. जंगल एवं वनस्पतियों की विविधता (पेड़-पौधे, वनोपज एवं औषधि)

क्र.	वनस्पति का नाम	स्थानीय प्रजाति का नाम	इस प्रजाति के किस हिस्से का प्रयोग होता है	क्या उपयोग है	अनुमानित उत्पादन (संख्या या क्षेत्र एकड़ में)	वर्तमान स्थिति पर्याप्त संख्या/दुर्लभ/ संकटमय/विलुप्त
समुदाय में इनके बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम						

अन्य जानकारी						

8. जैव विविधता एवं संस्कृति

8.1 जैव विविधता से जुड़े त्यौहार एवं रीति-रिवाज़

क्र.	रीति-रिवाज़ या त्योहार का नाम	कब होता है	विवरण (मनाने का तरीका, जैव विविधता सामग्री का उपयोग, कब से प्रचलित है)	किस जाति/समुदाय में प्रचलित है	मान्यता क्या है	जैव विविधता पर प्रभाव व जुड़ाव
समुदाय में इनके बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम						

8.2 जैव विविधता से जुड़ी लोक कथाएं/लोक गीत/मुहावरे/कहावतें

क्र.	जैव विविधता से जुड़ी लोक कथाएं/लोक गीत/मुहावरे/कहावतें संक्षेप में	जैव विविधता से जुड़ाव	कब इनका उपयोग करते हैं	वर्तमान स्थिति

8.3 खाद्य विविधता

क्र.	खाद्य (शाकाहारी एवं मांसाहारी व्यंजनों के नाम)	किस अवसर पर बनता है	किस अनाज एवं खाद्य पदार्थ का उपयोग होता है	इसके पीछे क्या मान्यता है	वर्तमान स्थिति पर्याप्त उपयोग में/कभी-कभी/विलुप्त हो गई	जैव विविधता पर क्या प्रभाव है

समुदाय में इनके बारे में गहन जानकारी रखने वाले व्यक्तियों के नाम						

9. जैव विविधता संबंधी संकलित प्रादर्श (नमूना) का विवरण

प्रादर्श का नाम	सरल क्रमांक	प्रादर्श के बारे में	उपयोग	वर्तमान स्थिति

प्रादर्श का नाम	सरल क्रमांक	प्रादर्श के बारे में	उपयोग	वर्तमान स्थिति

प्रादर्श का नाम	सरल क्रमांक	प्रादर्श के बारे में	उपयोग	वर्तमान स्थिति

10. समुदाय में जैव विविधता के जानकार लोग

क्र.	जानकार व्यक्तियों के नाम	किस तरह का ज्ञान	संपर्क (पता व मोबाइल नंबर)

कार्यवाही का विवरण

जैव विविधता का संरक्षण और सामुदायिक पहल (प्रायोगिक / मैदानी कार्य)

प्रायोगिक मैदानी कार्य के लिए कुछ बिंदु	क्या कार्यवाही करें?
जैव विविधता के बारे में समुदाय के ज्ञान से सीखना। खुले मन से और बिना किसी पूर्वाग्रह के समुदाय के ज्ञान को जानना।	समझने और उससे सीखने की प्रक्रिया शुरू करना। हो सकता है कि जैव विविधता जैसे शब्द के बारे में उनकी कोई जानकारी नहीं हो किन्तु इसके बारे में उनकी अपनी शब्दावली जरूरी है। उसे जानने की कोशिश करें। यह काम गांव/समुदाय के सयाने लोगों के साथ संयम से संवाद करके ही किया जा सकता है।
आजीविका व खाद्य सुरक्षा के लिए जैव विविधता के उपयोग को जानना	गांव/समुदाय के लोग आजीविका के लिए जैव विविधता पर कैसे और कितने निर्भर हैं, यह जानना। इसमें पशुपालन से लेकर लघु वन उपज और खेती तक के काम शामिल हो सकते हैं। यह ध्यान रखें कि हमें आजीविका के हर क्षेत्र/काम से जैव-विविधता के सम्बन्ध के बारे में स्पष्ट जानकारी देना है।
संस्कृति और विश्वास के लिए जैव-विविधता के उपयोग को जानना	गांव/समुदाय के लोग संस्कृति और विश्वास के लिए जैव विविधता पर कैसे और कितने निर्भर हैं, यह जानना। इसमें धार्मिक अनुष्ठान, त्योहार और विशेष अवसर के काम शामिल हो सकते हैं। यह ध्यान रखें कि हमें हर संस्कृति और विश्वास से सम्बंधित व्यवहार से जैव-विविधता के सम्बन्ध के बारे में स्पष्ट जानकारी देना है।
जैव विविधता की उपलब्धता	गांव/पंचायत/समुदाय के क्षेत्र में किस तरह की और कितनी जैव विविधता है, इसका आंकलन करना। इसके लिए हम प्रारूपों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
जैव विविधता की मौजूदा स्थिति	यह जानना कि जैव विविधता की मौजूदा स्थिति क्या है, क्या जैव-विविधता सुरक्षित है या संकट में हैं?
किशोर उम्र के बच्चों के साथ जैव विविधता संवाद	आप गांव/समुदाय के किशोर उम्र के बच्चों के साथ जैव-विविधता के विषय पर संवाद करें और गांव/आसपास जैव-विविधता का दस्तावेजीकरण करने में उन्हें शामिल करें। गांव/समुदाय के सयाने लोगों से उनका संवाद करवाना।
स्कूल में जैव-विविधता जागरुकता गतिविधि का आयोजन	स्थानीय जैव-विविधता की जानकारी और अध्ययन के आधार पर स्थानीय स्कूल में इस विषय पर विद्यार्थियों के साथ संवाद, प्रदर्शनी का आयोजन करें। स्कूल में छात्रों के सहयोग से जैव विविधता कॉर्नर स्थापित करें।
जैव-विविधता पर ग्राम सभा की बैठक	स्थानीय जैव-विविधता की जानकारी और अध्ययन के आधार पर ग्राम सभा में इस विषय पर संवाद का आयोजन करें। इसी के आधार पर संरक्षण की कार्ययोजना बनवाना और उसे लागू करवाने में भूमिका निभाएं।

जैव विविधता संरक्षण की पहल

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंचतत्व से बना शरीर यानि हमारा शरीर पृथ्वी, पानी, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्व से मिलकर बनता है। यह हमारे जीवन का आधार है। हमारी बढ़ती जरूरतों एवं लालच के कारण आज परवाह किये बिना हम प्रकृति द्वारा दिए हुए इन तत्वों का उपयोग कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरुप पूरी जैव-विविधता संकट में है। यह जरूरी है कि हम सब मिलकर इन तत्वों की रक्षा करें ताकि हम सुरक्षित रह सकेकं, हमारा खाना सुरक्षित हो, हम खुली एवं साफ़ हवा में साँस ले सकेकं, स्वच्छ पानी पी सकें, बीमारी से बच सकें।

आओ मिलकर जैव विविधता का संरक्षण करें – जल स्रोतों का संरक्षण अपने गांव या आसपास पानी के स्रोत (कुआ, बावड़ी, तालाब, नदी, नाले, झील, झरने आदि) सबके लिए है और इनको बनाये रखना हम सबकी मिलीजुली जिम्मेदारी है। हम इसको साफ़ रखें एवं उसमें पानी बनाये रखने के लिए उनमें पानी पहुँचने के रास्तों एवं क्षेत्रों को अवरोधित न करें। मिलकर इन जल स्रोतों की मरम्मत/सफाई करें एवं इसके उपयोग करने के लिए समुदाय में चर्चा एवं संवाद करके निर्णय लें कि इसका उपयोग कैसे किया जाएगा। इसका एक नियम बनाकर हम गांव की चौपाल पर लगा सकते हैं। गांव या बस्ती में जितना पानी उपयोग होगा उतना ही पानी उसमें कैसे आएगा या बना रहेगा इसका उपाय जरूर करें। इस काम के लिए शासकीय योजनाओं एवं साधनों का उपयोग भी कर सकते हैं। जब हम पानी को सहेजेंगे तो इसका मतलब हुआ कि पानी पर आश्रित उन सब जीव जंतुओं एवं वनस्पतियों को जिन्दा रख सकेंगे जो जैव विविधता का आधार हैं। जलीय जीवों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगायें।

हमारे आसपास पेड़ पौधों एवं वनस्पतियों का संरक्षण – अपने आसपास हरियाली बनाये रखें एवं हरियाली कम न होने दें। पेड़ पौधों को न काटें और दूसरों के द्वारा काटे जाने पर रोकें एवं टोकें। हम अपने आसपास कितने परिवार में सदस्य हैं, उतने पेड़ जरूर लगायें। हम अपने घर के आस-पास सब्जियों, फलों, औषधियों को उगा सकते हैं जो हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। जब हम पेड़-पौधों को बचाते हैं, लगाते हैं तो हम उन जीव जंतुओं को भी बचाते हैं जो इन पेड़-पौधों पर रहते हैं। साथ ही हम पानी के स्रोतों को भी बचाते हैं क्योंकि पेड़-पौधों के द्वारा वहां का तापमान ठीक रहता है और पानी की प्रचुरता बनी रहती है। हमें वृक्षों को सामाजिक एवं आर्थिक संसाधन के रूप में प्रचारित करना होगा। निजी तथा सामुदायिक भूमि पर वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देना होगा, ताकि हम अपने पेड़ पौधों को विलुप्त होने से बचा सकें। पेड़-पौधों के काटने एवं जीव-जंतुओं के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाएं।

परंपरागत बीजों का संरक्षण – स्थानीय परम्परागत बीजों में स्थानीय जलवायु के अनुरूप विकसित होने एवं पोषकता से भरपूर होने की क्षमता होती है। बढ़ते हाइब्रिड बीजों के उपयोग के कारण हमारे देशी बीजों की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। हमें अपने गांव में फसलों, सब्जियों, फलों एवं जंगली पेड़-पौधों के बीजों को बचाने की जरूरत है। यह पौधे न केवल बहु उपयोगी हैं बल्कि स्थानीय जलवायु एवं जैव विविधता के संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाते हैं। हम स्थानीय बीजों को बढ़ावा दें एवं उन्हें सहेजकर रखें। अपने गांव में देशी बीजों का बैंक बना सकते हैं जिसमें बीजों को जमा करें एवं जरूरतमंद को उपलब्ध कराएं ताकि हमारे परंपरागत बीज ख़त्म न हों।

जैव विविधता बगीचा – अपने गांव के आसपास बगीचा लगाने की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। इन बगीचों, फलदार एवं औषधीय पौधों को लगाने की प्रथा थी। स्थानीय जंगल की पूजा की जाती थी। जंगल को बचाने के साथ ही साथ जंगल के जीव-जंतुओं की भी पूजा होती थी। यानि जैव विविधता एवं प्रकृति की रक्षा हमारी संस्कृति का हिस्सा थी। हम सामुदायिक स्तर पर मिलकर अपने गांव की सार्वजनिक भूमि पर जैव विविधता बगीचा लगाएं जो किसी जलस्रोत के पास हो। इस बगीचे में विविध प्रकार के पेड़-पौधों एवं वनस्पतियों को लगाएं एवं इसकी रक्षा हेतु उपाय करें।

जीव जंतुओं का संरक्षण – हमारे आसपास सूक्ष्म बैक्टीरिया, चींटी, कीड़े मकोड़े, केचुए से लेकर बड़े जीव हैं। सभी जीव-जंतु इस जैव विविधता का अहम हिस्सा हैं और वे प्रकृति की गुणवत्ता को बनाये रखने में अपनी भूमिका निभाते हैं। हमारा जीवन भी अन्य जीव-जंतुओं के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। हमें सभी जीवों को संरक्षित करना चाहिए और उन्हें इस प्रकृति में अपनी भूमिका निभाने के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। आमतौर पर कई इलाकों में कुछ जीव जंतुओं को शिकार के जरिये एवं कुछ जीवों को विषैला एवं खतरनाक मानकर मार दिया जाता है जैसे सांप, बिच्छु आदि, पर इन जीवों का भी जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। जरा सोचें, यदि सांप नहीं होगा तो चूहों की संख्या बढ़ जायेगी और यदि चूहों की संख्या बढ़ गयी तो फसल का क्या होगा। इसी तरह सभी जीव जंतु प्रकृति में एक दूसरे पर निर्भर हैं और संतुलन बनाये रखने में भूमिका निभाते हैं। हमें सभी जीवों के साथ प्रेम और उन्हें संरक्षण देना चाहिए, साथ ही उनके निवास के स्थानों को नष्ट नहीं करना चाहिए।

अन्य उपाय – इसके अलावा जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रकृति द्वारा दिए गए विविध संसाधनों के उपयोग पर समुदाय में चर्चा करें और उनके विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा दें। इसका मतलब यह है कि हम प्रकृति का उपयोग उतना ही करें जितना बहुत जरूरी है, उसे व्यर्थ में ख़राब न करें ताकि वह न केवल बना रहे बल्कि सत्ता रूप से आगे भी उसकी उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। जैव विविधता से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों (कहानी, नुक्कड़ नाटक, त्योहार आदि) एवं गतिविधियों को पुनर्जीवित करें एवं ऐसे लोगों को सम्मानित करें जो जैव विविधता का ज्ञान रखते हैं और उसे बचाने के लिए प्रयास करते हैं। गांव की चौपाल पर अपने आसपास के खूबसूरत पर्यावरण को बनाये रखने के लिए संवाद करें।

जैव विविधता संरक्षण कार्य योजना

क्र.	जैव विविधता संरक्षण हेतु किए जाने वाले कार्य	कब करेंगे	कहां करेंगे	अपेक्षित परिणाम

जैव विविधता संरक्षण कार्यवाही का विवरण

सहभागी समूह (जैव विविधता पंजी बनाने के लिए) का नाम

सदस्य का नाम	समूह का नाम	हस्ताक्षर	सदस्य का नाम	समूह का नाम	हस्ताक्षर

सहभागी समूह में सुधार हेतु की गई कार्यवाही / पहल का परिणाम

क्र.	जैव विविधता हेतु की गई पहल	पहल की समयावधि	क्या बलदाव आया

जैव विविधता में सुधार हेतु की गयी सफल कार्यवाही / पहल की कहानी / केस स्टडी लिखें

बीज टूट जाता है
अंकुर फूट जाता है
तना दरक जाता है
डगाल निकल आती है
डगाल चिर जाती है
पत्ते निकल आते हैं
फूल निकल आते हैं
फल निकल आते हैं,
कीट आते हैं पत्तों को खा जाते हैं
मिट्ठू फल को कुतर जाते हैं,
चिड़िया आती है घर बना लेती है
रहती है, जीती है, अंडे सेती है,
उड़ जाती है

दीमक जमती जाती है
बीज अलग हो जाते हैं
अपने हिस्से की जमीन में गड़ जाते हैं
टूट जाते हैं, टूट कर पूरे हो जाते हैं
पत्ते सूख कर गिर जाते हैं
पेड़ शोक नहीं मनाता है
पेड़ कभी लड़ता नहीं है
चिड़िया कभी कब्ज़ा नहीं जमाती
फल अपनी कीमत नहीं लगाता
सबको पता होते हैं अपने होने के मायने
कुदरत में अस्तित्व का अहसास होता है
कुदरत में जीवन एक चक्र होता है
कुदरत में अहंकार नहीं होता
कुदरत के जीवन चक्र में बाज़ार नहीं होता।

- सचिन कुमार जैन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
terre des hommes Help for Children in Need
VIKAS SAMVAD
Youth for Ecological Sustainability